IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

METHODS OF MEASURING AND INTERPRETATION OF OUTCOMES IN EDUCATIONAL AND SOCIAL RESEARCH

REKHA CHOPRA
RESEARCH SCHOLAR
(JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR, RAJASTHAN)

सामाजिक अनुसंधान (Social Research):–

प्रस्तावना :–

सामाजिक अनुसंधान ;वबपंस त्मेमंतबीद्ध का समाजशास्त्रा में एक विशेष महत्त्व है। समाज में घटने वाली क्रियाओं के व्यवस्थित अध्ययन के लिए सामाजिक अनुसंधान की विधि को लेकर कई मत व्यक्त किए गए हैं। कुछ समाजशास्त्रियों ने यह महसूस किया कि समाजशास्त्रा में सामाजिक अनुसंधान को विधिवत स्थापित करने के लिए विज्ञान में अपनाये गयी विधि का प्रयोग काफी उपयोगी हो सकता है। वह° दूसरी ओर समाजशास्त्रा के कुछ ऐसे भी विचारक थे, जिन्होंने इस मत का खंडन करते हुए यह बताया कि सामाजिक शोध की विधि विज्ञान से भिन्न होनी चाहिए। जिन लोगों ने विज्ञान के विधि को उत्तम मानकर सामाजिक अनुसंधान पर जोर दिया उनमें फ्रांस के समाजशास्त्राी अगस्त काम्ट, इमाइल दूखखम के नाम मुख्य रूप से लिये जाते हैं।

सामाजिक अनुसंधान की प्रकृति (Nature of Social Research):–

सामाजिक अनुसंधान के प्रकृति की व्याख्या करते हुए अगस्त काम्ट (1798–1857) का विचार था कि जिस प्रकार प्रकृति विज्ञान में तथ्यों का विश्लेषण वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है उसी प्रकार सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन भी समाजशास्त्रा में वैज्ञानिक

विधि को अपनाकर सामाजिक शोध करना संभव है। काम्ट के अनुसार सामाजिक अनुसंधान के निम्न चार विधि का अनुसरण करना आवश्यक है–

a. निरीक्षण (Observation)
b. प्रयोग (Experiment)
c. तुलनात्मक विधि (Comparative Method)
d. ऐतिहासिक विधि (Historical Method)

निरीक्षण ;व्ेमतअंजपवदद्धरूनिरीक्षण का सीधा संबंध सामाजिक क्रियाओं के अवलोकन से है। इस विधि का प्रयोग हमारे ज्ञानेन्द्रियों के इस्तेमाल से जुड़ा है। घटनाओं को हम अपने आँखों से देखकर उस घटना, क्रिया तथा प्रक्रिया के बारे में अनुमान लगाते हैं। जिन तथ्यों का अवलोकन नह° किया जा सके उसे विज्ञान की कसौटी पर विश्वसनीय नह° माना जा सकता है। इसलिए निरीक्षण को सामाजिक अनुसंधान का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है।

प्रयोग ;म्गचमतपउमदजद्धरू प्रयोग विधि का इस्तेमाल यद्यपि विज्ञान में विशेषकर पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा जीव विज्ञान में प्रयोगशाला में नियंत्रित वातावरण में किया जाता है। समाजशास्त्रा में विज्ञान के स्तर का प्रयोग संभव नह° हो सकता। इसलिए यह कहा जाता है कि समाज विज्ञान में प्रयोग करना तथा प्रकृति विज्ञान में प्रयोग किया जाना अलग स्थिति को दर्शाते हैं। समाजशास्त्रा में प्रयोग से तात्पर्य कारक तत्त्वों के नियंत्राण से है। उदाहरण के लिए एक गाँव में परिवार नियोजन की सफलता के लिए उस गाँव को परिवार नियोजन पर आधारित फिल्म व उससे संबंधित जानकारी दी जाए और दूसरे गाँव को इससे वंचित रखा जाये तो यह एक प्रकार के नियंत्राण की प्रक्रिया मानी जायेगी।

तुलनात्मक विधि ;ब्वउचंतंजपअम डमजीवकद्ध:

तुलनात्मक विधि का इस्तेमाल अक्सर विज्ञान में मानव समाज और प्राणी जगत के बीच तुलना के द्वारा किया जाता है। समाजशास्त्रा में तुलनात्मक विधि का प्रयोग परंपरागत समाज और आधुनिक समाज जिसे ग्रामीण तथा शहरी समाज कहा जाता है – के लिए किया गया। एक ही समाज की तुलना दो विभिन्न समय तथा काल के संदर्भ में भी की जा सकती है। इतिहास के संदर्भ में ही एक समाज का अध्ययन दो विभिन्न समय को ध्यान में रखकर किया जाता है। मुगल काल तथा ब्रिटिश काल के समय समाज के स्वरूप में काफी अंतर पाया जाता है। इस प्रकार समाजशास्त्रा में भी तुलनात्मक विधि का प्रयोग कर महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

ऐतिहासिक विधि ;भ्पेजवतपबंस डमजीवकद्ध:

ऐतिहासिक विधि से काम्ट का तात्पर्य समाजशास्त्रा में सिद्धान्त प्रतिपादित करने से था। मानवीय विचारों में जो बदलाव आते हैं उस बदलाव का अध्ययन समाज को आधार मानकर किया जा सकता है। यद्यपि काम्ट ने इस विधि का प्रयोग सीमित स्तर पर किया था परंतु सामाजिक अनुसंधान के लिए इसका वृहत स्तर पर प्रयोग कर महत्त्वपूर्ण उपकल्पनाएं बनाये जा सकते हैं।

सामाजिक अनुसंधान का विषय क्षेत्र (Scope of Social Research) :-

सामाजिक अनुसंधान के अध्ययन क्षेत्र की बात को लेकर साधारणतया यह सवाल उठाया जाता है कि सामाजिक अनुसंधानकर्त्ता कितने तथ्यों की जानकारी शोध द्वारा करते हैं? किन अवधारणाओं और अनुमानों पर वे अपने शोध का आधार बनाते हैं? शोध का प्रयोजन क्या होता है? क्यों शोध किये जाते हैं? क्या शोध के बिना तथ्यों की जानकारी संभव है? अगर इन सवालों को ध्यान में रखकर चर्चा की जाये तो संभवतः शोध का क्षेत्रा इतना व्यापक हो जाये कि उसका वर्णन करना थोड़ा कठिन प्रतीत हो। इसलिए शोध से संबंधित इसके विषय क्षेत्रा का वर्णन कुछ मौलिक बातों को ध्यान में रखकर ही किया जाना ज्यादा उचित होगा।

सामाजिक अनुसंधान में अवधारणा (Concept in Social Research) :–

किसी भी सामाजिक अनुसंधान में अवधारणा का अपना अलग महत्व होता है। शोधकर्ता तथ्यों के अवलोकन तथा संकलन कर उन तथ्यों को शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त करना चाहता है। तथ्यों की वैज्ञानिक अभिव्यक्ति के लिए अवधारणाओं की मदद ली जाती है। ये अवधारणाएं एक सोचने की अमूर्त प्रक्रिया है जिसके द्वारा घटनाओं व तथ्यों का वर्णन हो पाता है। अवधारणाओं की मदद से किसी घटना, प्रक्रिया या तथ्य का संक्षेप में वर्णन संभव हो पाता है। गुडे तथा हाट ने इसलिए अवधारणा को एक तार्किक मानवीय सोच की प्रक्रिया बताया है जो हमारे सोचने समझने की नैसर्गिक प्रक्रिया है। यह हमारे ज्ञान व सोच की एक मानसिक तथा अमूर्त प्रक्रिया है जिसका महत्व सिद्धान्त के संदर्भ में कॉफी महत्वपूर्ण हो जाता है। तथ्य की तरह ही यह एक अमूर्त प्रक्रिया है। जब शोधकर्ता तथ्यों में अन्तः सम्बन्ध को देखता है अथवा एक निश्चित घटना या व्यवहार प्रतिमान को वह पृथक करने में सफल होता है तो वह उस सम्पूर्ण स्थिति को अति संक्षेप में एक दो शब्द की सहायता से अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है। तथ्यों के एक वर्ग की इस संक्षिप्त अभिव्यक्ति को ही विज्ञान में अवधारणा ;ब्वदबमचजद्ध कहा जाता है। पी0वी0 यंग ने लिखा है कि तथ्यों ;कंजंद्ध के प्रत्येक नए वर्ग को, जिसे कि अन्य वर्गों से कुछ निश्चित विलक्षणताओं के आधार पर अलग कर लिया गया हो, एक नाम या एक लेबल दे दिया जाता है जो कि अवधारणा कहलाता है। वास्तव में एक अवधारणा तथ्यों के एक वर्ग या समूह की एक संक्षिप्त परिभाषा हैं। 'कक्षा पलायन' ;ज्तनंदबलद्ध 'संस्कृति', 'नेतृत्व', 'समाज' आदि अवधारणाओं के ही उदाहरण हैं। अवधारणाओं के कुछ परिभाषा को द्वारा समझना आवश्यक है। सैरैग ;बींतंहद्ध के अनुसार, 'अवधारणाएँ व शब्द या संकेत होते हैं जो सिद्धान्त की शब्दावली प्रदान करते हैं एवं उसकी विषयवस्तु को बतलाते हैं'। अर्थात् सिद्धान्त के अभिव्यक्ति का एक उत्तम जरिया है अवधारणा। फेचरचाइल्ड ने भी इसी बात को वैज्ञानिक संदर्भ द्वारा जोड़कर देखा है। उनके अनुसार ''अवधारणाएँ वे विशिष्ट मौखिक संकेत हैं जो कि वैज्ञानिक निरीक्षण व चिन्तन के आधार पर निकाले गए सामान्यीकृत ;हमदमतंसप्रमकद्ध विचारों को दिए जाते हैं।''

सामाजिक अनुसंधान में उपकल्पना (Hypothesis in Social Research) :–

किसी भी शोध व अनुसंधान को एक सही निर्देश व आधार प्रदान करने के लिए एक सैद्धान्तिक आधार उसका प्रारूप होना आवश्यक है। उपकल्पना एक ऐसी ही स्थिति है जो शोधकर्ता को खोज करने से पूर्व कुछ अनुमान वा कुछ वैज्ञानिक सोंच को आधार मानकर काम करने के लिए प्रेरित करता है। अगर हम किसी व्यक्ति को देखते हैं कि वह जमीन में एक सीमित क्षेत्रा को खोद रहा है तो संभव है वह यह मानकर चल रहा हो कि कुछ दूर तक खुदाई करने के पश्चात उसे पानी मिल जाये। अर्थात उद्देश्यविहिन कार्य करना वैज्ञानिक विधि का कारण नहीं है। कुछ कार्य उद्देश्य को ध्यान में रखकर किये जाते हैं। संभव है हमारा अनुमान सच हो या फिर वह गलत भी हो सकता है। जंगल में धुआँ उठते देख या रोशनी को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि धुआँ उठने वाले जगह पर या रात में जहाँ रोशनी हो रही है वहाँ कुछ लोग बसते हों। वहाँ एक कस्बा होगा जहाँ कुछ लोगों से मिलने की संभावना बनती ळें

शैक्षिक अनुसंधान की प्रस्तावना :–

शैक्षिक अनुसंधान से तात्पर्य उस अनुसंधान से होता है, जो शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता है। उसका उद्देश्य शिक्षा के विभिन्न पहलुओं, आयामों, प्रक्रियाओं आदि के विषय में नवीन ज्ञान का सृजन,वर्तमान ज्ञान की सत्यता का परीक्षण, उसका विकास एवं भावी योजनाओं की दिशाओं का निर्धरण करना होता है। ट्रैवर्स ने शिक्षा–अनुसंधान को एक ऐसी क्रिया माना है, जिसका उद्देश्य शिक्षा–संबंधी विषयों पर खोज कर के ज्ञान का विकास एवं संगठन करना होता है। विशेष रूप से छात्रों के उनव्यवहारों के विषय में ज्ञान एकत्र करना, जिनका विकास किया जाना शिक्षा का धर्म समझा जाता है, शिक्षा–अनुसंधान में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। ट्रैवर्स के अनुसार, शिक्षा के विभिन्नपहलुओं के विषय में संगठित वैज्ञानिक ज्ञान–पुंज का विकास अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि उसी वेशिक्षा अनुसंधान की प्रति स्वयं सीखने की सामग्रीआधार पर शिक्षक वे लिए यह निर्धारित करना संभव होता है कि छात्रों में वांछनीय व्यवहारों वेविकास हेतु किस प्रकार की शिक्षण एवं अधिगम परिस्थितियों का निर्माण करना आवश्यक होगा।शिक्षा वे क्षेत्रा में शैक्षिक अनुसंधन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा की प्रमुख समस्या है किउसकी प्रक्रिया को सुदृढ़

प्रभावशाली एवं सशक्त वैफसे बनाया जाए। इस समस्या वे समाधन हेतुअनुसंधन की आवश्यकता है। मौलिक अनुसंधनों से ज्ञानक्षेत्रा में वृष्टि की जाती है। प्रयोगात्मकशोध्कार्यों से नवीन सिद्धांतों तथा नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। क्रियात्मक अनुसंधन कीसंकल्पना का जन्म स्टीपफन एम. कोरे वेफ विचारों में हुआ। विद्यालयों वेफ समक्ष उस समय अनेकसमस्याएँ थीं जिनवेफ समाधन उपलब्ध नहीं हो पा रहे थे। उस समय स्टीपफन एम. कोरे की पुस्तक'एक्शन रिसर्च टू इम्प्रूव स्वूफल प्रैक्टिस' ने इन समस्याओं वेफ समाधन की दिशाएँ सुझाई थीं। यहीसुझाव क्रियात्मक अनुसंधन कहलाया। क्रियात्मक अनुसंधन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसवेफ द्वारा किसीक्षेत्रा वेफ कार्यकर्ता अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करवेफ, उसका मूल्यांकन करते हैं।

<u>षैक्षिक एवं सामाजिक अनुसंधान में परिणामों की व्याख्या एवं मापन के तरीके :–</u>

- मौलिक अनुसंधान
- व्यावहारिक अनुसंधान
- परिणात्मक अनुसंधान
- गुणात्मक अनुसंधान
- ऐतिहासिक अनुसंधान
- क्रया अनुसंधान
- घटनोत्तर अनुसंधान
- सर्वेक्षण अनुसंधान
- लम्बात्मक अनुसंधान